मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मई २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ५

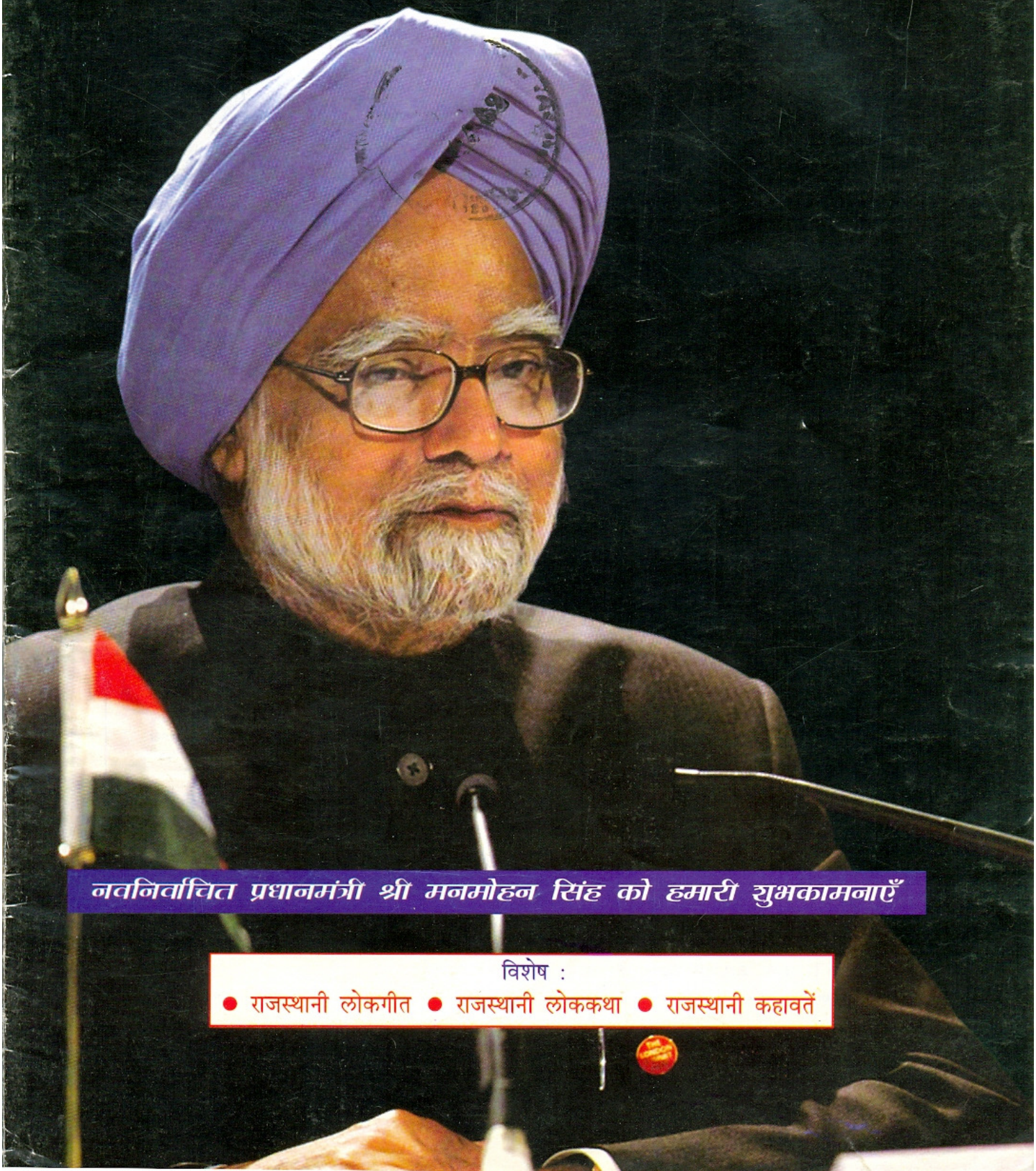

नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह को हमारी शुभकामनाएँ

विशेष :

● राजस्थानी लोकगीत ● राजस्थानी लोककथा ● राजस्थानी कहावतें

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास

मई २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक ०५ ✦ एक प्रति-१० रु. ✦ वार्षिक-१०० रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक | पृष्ठ संख्या

चिट्ठी–पत्री ४

श्रद्धांजलि: विश्वनाथ सुल्तानिया नहीं रहे ५

अपनी बात – शम्भु चौधरी ६

अध्यक्षीय – नन्दलाल रूँगटा ७

जनता सब जानती है – सीताराम शर्मा ९

राजस्थान पर कुछ विशेष

राजस्थानी लोकगीतों में जीवन मूल्य – डॉ. शान्ति जैन १०–११

राजस्थानी लोकगीत १२–१५

राजस्थानी कहावतें १५

राजस्थानी लोककथा – स्व. भागीरथ कानोडिया १६–१७

राजस्थानी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है – केसरीकान्त शर्मा १८

सिसकियाँ लेता बुढ़ापा – त्रिलोकी दास खण्डेलवाल २५–२६

कविताएं :

मंथन - रामजीलाल घोड़ेला 'भारती' १७

घर का चूल्हा – शम्भु चौधरी २६

आज सिसकती है मानवता – परशुराम तोदी 'पारस' ३४

समारोहों में व्यंजनों की संख्या – रामगोपाल गोयनका २७

चमत्कारी हैं तिब्बत के थंका – पुखराज सेठिया २८

मंथन के मोती–१ – डॉ. विजय अग्रवाल २९

परिचय :

अरविंद केजरीवाल ३०–३१

युगपथ चरण ३३–३८

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि.

४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी पत्री

"बुफे डिनर"

आज फरवरी २००९ का अंक प्राप्त हुआ। समाज विकास का विकास उत्तरोतर आगे बढ़ रहा है। सामाजिक रचनायें पठनीय एवं ग्रहण करने योग्य हैं।

"बुफे डिनर" कविता में सच्चाई की झलक परिलक्षित है।

"धूल जीमणों और जिमाणो, क्यूं निज धरम गवावं।"

कवि ने म्हारा मन की बात लिख दिनी है।

- हजारीमल ओझा, प्रधान संपादक
'झलक' मासिक पत्रिका
मो. - ०९४३७०६४१९०

"अध्यक्षजी के नाम एक पत्र"

मार्च २००९ का अंक मैंने पढ़ा बहुत ही अच्छा लगा। श्री विजय कुमारजी बुधिया का लेख 'अध्यक्षजी के नाम एक पत्र' में मुझे कुछ नई जानकारी मिली यह हमारे समाज की बड़ी सफलता है। धरोहर–१ : श्री माहेश्वरी विद्यालय कोलकाता, धरोहर–२ : मारवाड़ी अस्पताल वाराणसी, धरोहर–३ : गुवाहाटी गौशाला असम इत्यादि। हमारा समाज निरन्तर शुभ कार्य में आगे बढ़ता रहे मेरी हार्दिक इच्छा यही है।

- परशुराम तोदी (पारस)
सलकिया, हावड़ा-६

नमस्कार! समाज में दहेज दिखावा, भ्रूण हत्या, तलाक व भाषा जैसे अनेक जटिल प्रश्न हैं जिसका हल अति कठिन है। हमारे १४ प्रान्तों के कार्यकर्ताओं को इन प्रश्नों पर अति गहराई से चिन्तन करने कि आवश्यकता है। संगठित समाज ही समस्याओं को सुलझाने में कामयाब हो सकती है।

-दानचन्द बाफना

सम्पादकीय बंग्ला संस्कृति मनन योग्य है। अपनी भाषा की ओट में अन्य भाषाओं को नकारना पतन की पराकाष्ठा है। न जाने हिन्दी के लोग दुश्मन क्यों बने हुये हैं। अंग्रेजी को तो माला की तरह अपने गले से लटकाये अपने को महान होने का लोग प्रदर्शन करते हैं। कोई भाषा बुरी नहीं बल्कि एक दूसरे की पूरक है। महाराष्ट्र में भी मराठी संस्कृति का कोल साईन कोई हटा कर किया जाता है। यह देश के लिए एक खतरनाक संकेत है। इस हीन भावना को छोड़ हमें सकारात्मक सोच का निर्माण करना होगा। हर भाषा से प्रेम करना होगा। राजस्थानी भाषा को घर में दफ्तर में सभा सोसाईटी में बोलना, इसकी मान्यता का ठोस प्रयास होगा।

शिक्षण संस्थाओं, सांस्कृतिक मंचों पर खेलने लायक १० हास्य नाटक लेखक : नागराज शर्मा

मूल्य : १२.५० रुपया

- नागराज शर्मा
बीनजारो प्रकाशन, पीलानी - 333031 (राज.)

मानसिकता बदलें

मारवाड़ी समाज

बीते दिनों महानगर में बीसों जगह 'मारवाड़ी' नाम वाली संस्थाओं ने दीपावली प्रीति सम्मलेन आयोजित किया। सभी का दावा यही था कि समाज में एकता, भाईचारा, सामाजिक सौहार्द्रता बढ़ाने में ऐसे कार्यक्रम मददगार साबित होंगे। किंतु जमीनी सच्चाई इससे कोसों दूर दिखाई पड़ी। हर संस्था के कार्यक्रम में यही दिखा कि उस संस्था के पदाधिकारी, कार्यकारिणी समिति के लोग तथा सदस्यगण ही आयोजन में नजर आ रहे थे। आम मारवाड़ी, जो किसी संस्था का पदाधिकारी या सदस्य नहीं है, उसका इन कार्यक्रमों से कोई लेना-देना नहीं था। ऐसे लोगों को यह भी पता नहीं चला की हमारे समाज के लोग समाज के लिए क्या कर रहे हैं। सवाल यह है कि क्या इसी तरह सामाजिक एकता आ जायेगी? "अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग" बजाना क्या उचित है? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि एक बड़ा बैनर बनाकर समूचे मारवाड़ी समाज को एक जगह लाया जाए। किसी बड़ी जगह में दिनभर का कार्यक्रम आयोजित कर समाज के लोगों को एक-दूसरे के करीब लाया जाए? इन कार्यक्रमों में राजस्थान से लोक कलाकारों को बुलाया जाए ताकि लोग राजस्थानी कला, संस्कृति के नजदीक पहुँच सकें। हमारे समाज के कर्णधार ऐसा करें तो उनका प्रयास सार्थक होगा और समाज का भी भला होगा। उम्मीद है कि जल्दी ही ऐसा देखने को मिलेगा।

- संजय नाथानी
कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

श्रद्धाजंलि

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

के अध्यक्ष विश्वनाथ सुल्तानिया नहीं रहे

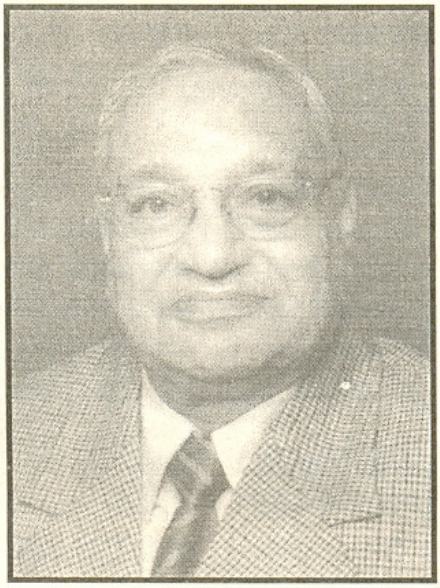

विश्वनाथ सुल्तानिया

जन्म ७ अक्टूबर १९३८ मृत्यु २५ मई २००९

पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष विश्वनाथ सुल्तानिया का सोमवार, २५ मई २००९ को निधन हो गया। ७२ वर्षीय श्री सुल्तानिया कैंसर रोग से पीड़ित थे। सोमवार की दोपहर निमतल्ला श्मशान घाट में उनकी अंत्येष्टि की गयी। सुल्तानिया के निधन पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा, पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री रामअवतार पोद्दार, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया एवं महामंत्री श्री रामगोपाल बागला ने गहरा शोक प्रकट किया है। सम्मेलन ने अपने विज्ञप्ति में कहा कि स्व. सुल्तानिया जी का कार्यक्षेत्र व्यापक था, सामाजिक कार्यों में उनकी भागीदारी हमेशा देखी जाती रही है।

परिचयः विश्वनाथ सुल्तानिया का जन्म ७ अक्टूबर १९३८ में चिड़ावा, शेखावटी (राजस्थान) में हुआ। बचपन से ही आप सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। चिड़ावा में १२वीं कक्षा की पढ़ाई समाप्त करके आप कोलकाता आ गये, कोलकाता के सिटी कॉलेज से आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन से ही समाज सुधार जैसे कार्यों में जुटे रहे। आपने आजादी की लड़ाई के समय गुप्त सूचनाओं के आदान–प्रदान में अपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विनोवा भावे के भूदान यज्ञ जैसे कार्यक्रमों से जुड़कर देश की सेवा करने का अवसर भी आपको प्राप्त हुआ। हावड़ा लायन्स क्लब के अध्यक्ष पद पर रह कर कार्य कर चुके श्री सुल्तानिया जी को सम्मेलन के प्रति शुरू से ही विशेष लगाव रहा है। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथ–साथ शहर के कई संस्थाओं से जुड़े हुये हैं, जिनमें श्री रामस्नेही सत्संग समिति, चिड़ावा नागरिक परिषद, श्री बिहारीजी सेवा सदन (वृन्दावन के ट्रस्टी, प्रमुख हैं स्वभाव से शान्त, मन से निर्मल और हृदय से कोमल श्री सुल्तानिया जी किसी भी पीड़ित को देखकर व्याकुल हो उठते थे। विशाल हृदय के स्वामी श्री सुल्तानिया जी का यह छोटा सा परिवार है। वर्तमान में आप पं० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर कार्यरत थे। मृत्यु २५ मई २००९ को कोलकाता में। सम्मेलन की तरफ से भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित।

```
ERROR: stackunderflow
OFFENDING COMMAND: ~

STACK:
```